रात्रि क्लास 24/12/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

अज्ञान काल में भाई भाई होकर याद पड़ता है, चाचा चाचा होकर याद पड़ता है। यहां तुमको बाप, टीचर, सद्गुरु याद पड़ेगा। है एक ही। वही राजयोग सिखलाते हैं। यहां पहले मूल बात है पवित्र बनना है। बाप को याद करना है, फिर राज्य पद पावेंगे। तुम हो राजऋषि। ऋषि पवित्र होते हैं। वही बाप, टीचर है। यह ज्ञान बुद्धि में है वह सद्गुरु भी है? और दैवीगुण भी धारण करनी है अगर आसुरी गुण होंगे, कोई पर क्रोध किया, तो सद्गुरु की निन्दा करावेंगे। हमको नई दुनियां में मर्तबा पाना है बहुत ऊंच पद है। ऐसा कर्म न करना चाहिए जिससे बाप की निन्दा हो। कोई क्रोध किया तो कहेंगे इनको भगवन पढ़ाते हैं फिर यह भूत क्यों। क्रोध का भूत है, देह–अहंकार भी भूत है। यह है ही आसुरी भूतों की दुनिया तुम बच्चों को दैवीगुण धारण करनी है। अपने ऊपर नजरदारी रखनी है। सावधान न होने से घाटा पड़ता है। बहुत मेहनत है। उल्टा कर्म करने से उतर पड़ेंगे। उतरना और चढ़ना इस समय बहुत है। माया उतारती है, बाप चढ़ाते हैं। चढ़ने लिये दैवीगुण चाहिए। कोई से क्रोध नहीं करना है। निन्दा आदि नहीं करानी है। तब ऊँच पद पावेंगे। फर्क तो है ना। कर्म का भोग तो है ना! बाप ले जाते हैं स्वर्ग में। फिर भी कोई गरीब, कोई साहुकार बनते हैं। कर्म जैसा करेंगे ऐसा पद पावेंगे। यहां कर्म पर बहुत खबरदारी रखनी है। तुम पार्टधारी हो ना। रावण राज्य में तुम्हारे कर्म विकर्म बनते हैं। अभी बिल्कुल तमोप्रधान हैं। सभी से कड़ा है विकार। दुनियां में अभी क्या लगा पड़ा है। बाप समझाते हैं आँखें बड़ी क्रिमिनल हैं। अपन को आत्मा समझेंगे तो क्रिमिनल दृष्टि नहीं जावेगी। भाई 2 समझो। शरीर ही नहीं तो विकर्म कैसे होगा। मेहनत करनी है। दैवीगुण भी बहुत चाहिए। आत्माभिमानी बनो तब कर्मातीत अवस्था हो और तुम ऊँच पद पा सकते हो। थोड़ा भी समझकर जाते हैं, स्वर्ग में तो आवेंगे; परन्तु इतना बोझा भी सिर पर है ना। इस पढ़ाई में बड़ी खबरदारी चाहिए। जास्ती पढ़ेंगे और पढ़ावेंगे तो जास्ती प्रजा बनेंगी। सिर्फ़ कहा यह तो बहुत अच्छी नालेज है हम फिर आवेंगे। पैगाम मिला वह बेहद का बाप है उनको याद करना है इतना भी समझा तो भी स्वर्ग में आ जावेंगे। तुम सारे विश्व की बादशाही पाते हो सर्वशक्तिवान बाप से। रावण की शक्ति देखो कैसी है। कंगाल बना देती है। बच्चों को गुप्त मेहनत करनी है, तुम्हारा रहने का स्थान भी गुप्त दुनिया है, आत्माएं रहती हैं तुम उस गुप्त दुनियां में जाने वाले हो। तो अपन को आत्मा समझना और बाप को याद करना है। आत्मा ही धारण करती है, लेप–छेप आत्मा को लगती है ना। परमात्मा साथ योग रखो तो जंक उतरे। यह सभी ज्ञान की बातें समझने की हैं। बच्चों को सीखने भेजा जाता है तो पहले–2 सिखलाना है हमारा पारलौकिक बाप वह है। लौकिक बाप से वरसा मिलता है, पारलौकिक बाप से भी वरसा मिलता है। बाकी अलौकिक बाप से वरसा नहीं मिलता है, वरसा है ही हद का और बेहद का। तो पुरू0 भी ऐसा करना चाहिए। कोई बात समझ में न आये तो पूछो। अपन को आत्मा समझ नॉलेज सुनाते रहो। बाप के रूहानी बच्चे हो तो सभी को रूहानी बातें ही सुनानी हैं, यह है स्प्रीचुअल नालेज। भाईयों से यही वार्तालाप करना है। स्थूल काम–काज में तो सभी स्थूल बातें ही चलती हैं। समझानी तुमको यहां दी जाती है तुम्हारी आत्मा पतित बनी है, उनको पावन बनाना है, यह प्वाइंट्स है। पहले2 तो बताना है बाप दो हैं। एक हद का जिस्मानी बाप, एक है हम आत्माओं का परम पिता परमात्मा। उनसे बेहद का वरसा मिलता है। सतोप्रधान में सुख जास्ती रहता है। सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में रहनी चाहिए। हम स्टूडेन्ट हैं यह भूलना न चाहिए। भाइयों से हमेशा ज्ञान की बातें करो। बाप आकर बेसमझ को समझदार बनाते हैं। सारी दुनियां है बेसमझ। उनको समझदार बनाना पड़ता है, इसमें एक है मुख्य याद की यात्रा, तब ही सतोप्रधान बनेंगे। बाप ही आकर के सिखलाते हैं मामेकं याद करो। जितनी ज्ञान की धारणा करेंगे तो सतोप्रधान बन फिर सतोप्रधान दुनियां के मालिक बनेंगे। वह पढ़ाई तुम्हारी फिर कल्प–कल्पांतर चलेगी। कहा जावेगा कल्प2 ऐसा पुरुषार्थ करते हैं। अपने ऊपर नजरदारी चाहिए। जितना तुम पक्के होते जावेंगे उतना ही जास्ती सोझरा और अंधियारा कम होता

रहेगा। बाकी लड़ाई तो पिछाड़ी तक चलेगी। यह नालेज स्टूडेन्ट की बुद्धि में रहनी चाहिए। जब तक ट्रांसपर हो। पिछाड़ी में तुम सा0 भी करते रहेंगे। यह गुह्य2 बातें हैं। इस समय है तमोप्रधान दुनिया। नर्कवासी से स्वर्गवासी बाप को याद करने से बनेंगे। जितना याद करेंगे। सतयुग में भी फिर जैसे2 समय गुजरता जाता है तो कलाएं कम होती जाती हैं। जैसे मकान भी पुराना होता जाता है। तो जब तुम स्टूडेन्ट आपस में मिलते हो तो यही बातें चलनी चाहिए। बाप याद है? वरसा याद है? तो खुशी होगी। तो बाप को इस प्रकार याद करना है टीचर रूप में, सद्गुरु रूप में याद करो। दैवीगुण धारण करो। सारी नालेज बुद्धि में रहनी चाहिए। तुम समझते हो बाप राजयोग पढ़ा रहे हैं। हम पढ़कर मुनष्य से देवता बन जावेंगे। बाप में ज्ञान है ही। तुम्हारे पास भी ज्ञान रहना चाहिए, पढ़ाना चाहिए। फिर नम्बरवार ग्रेड्स तो हैं ही। कुछ गफलत की तो फर्स्ट से सेकण्ड थर्ड ग्रेड में कर देंगे। बाकी स्वर्ग में जरूर आवेंगे। पद हल्का हो पड़ेगा। पिछाड़ी को मालूम पड़ेगा हमारी राजधानी कैसे स्थापन होती है। कौन ऊंच पद पा रहे हैं। जो अच्छा पढ़ते हैं उनका रिगार्ड भी रखना चाहिए। रिगार्ड जरूर रखना है। जैसा आफीसर ऐसा रिगार्ड। गाया जाता है सर्वगुण सम्पन्न..... सभी गुण अपने में धारण करनी है। फिर तुम नम्बरवार बहुत मीठे बन जावेंगे। ऐसे नहीं कोई चमाट लगावे तो तुम चुप रहो; परन्तु तुमको कोई चमाट लगावेंगे ही नहीं। क्योंकि तुम सुख देते हो ना। कोई से झगड़ा आदि कुछ करने की दरकार नहीं। एक बात सभी को समझानी चाहिए तुम अपन को आत्मा समझो। आत्मा ही संस्कार धारण करती है। पतित–पावन बेहद के बाप को याद करो तो तुम पावन बनेंगे। तुम पैगम्बर–मैसेन्जर हो सुखधाम–शान्तिधाम का रास्ता बताने। तुम बच्चों को लिखते–पढ़ते, धंधा व्यवहार आदि करते यह अवस्था पक्की करना है तुम कोई को भी झट बाप का परिचय दे सकते हो। बाप आते ही हैं नई दुनियां स्थापन करने। झट तुम कोई को भी घड़ी2 ज्ञान दे सकते हो। बहुत सहज है। मानते हो बाप पतित–पावन है। तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। चलते2 तुम कोई को भी ज्ञान दे सकते हो। इतनी सहज है रेल में भी बैठ समझाओ। यह बेहद का बाप है जो स्वर्ग का राज्य देते हैं। जिनकी तकदीर में होगा वह जरूर आकर सुनने की कोशिश करेंगे। तो ऐसे सर्विस में लगते जाओ तो खुशी भी होगी। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के अन्त में यह है पतित, फिर पुरूषार्थ करते2 पावन बन जावेंगे। अच्छा यह है रूहानी बहलन विलास। अच्छा, रूहानी बाप दादा का याद प्यारगुडनाइट और नमस्ते।